दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-XIII/V (प्रश्नपत्र-1 : संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

DTVF/19 (N-M, J-S)–M–**HL13/5**

Name: Rajesh Kumar Meena **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** IP-19/1248

Center & Date: Mukharjee Nagar **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 1118307

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में विभिन्न धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन में सक्रिय संस्थाओं के अंतर्गत थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान उल्लेखनीय है।

इस संस्था ने अपने चिंतन के स्रोत के रूप में भारतीय दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर जोर दिया और हिन्दू, बौद्ध और पारसी धर्म की आत्मा को पुनर्जीवित करने की बात की। इसी क्रम में ~~उन्होंने~~ इसने इन गतिविधियों में हिंदी या खड़ी बोली। का प्रयोग किया।

ये जानते थे कि आम लोगों की प्रमुख भाषा खड़ी बोली है। अतः ~~उ~~ उन्होंने अपने ~~प्र~~ प्रचार-प्रसार कार्यों, भाषणों,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पत्र-पत्रिकाओं ~~के~~ के प्रकाशन में खड़ी बोली को प्रमुखता दी।

इसके अंतर्गत हिन्दू, बौद्धों के इन ग्रंथों के ~~बातों~~ बातों के प्रचार - प्रसार से खड़ी बोली हिंदी को बढ़ावा मिला। इसकी संस्थापक एनी बीसेन्ट भी ~~के~~ प्रचार-प्रसार की भाषा के रूप में राष्ट्रभाषा हिंदी को प्रमुख महत्त्व देती थी।

समग्र रूप से इन विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से थियोसोफिकल सोसायटी ने ~~राष्ट्रभाषा~~ संक्रमणकाल के दौरान खड़ी बोली का पक्ष लेकर उसके उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी का प्रयोग सूफी प्रेमाख्यानक काव्य धारा के कवियों जैसे जायसी, मुल्ला दाउद तथा रामकाव्यधारा के कवियों जैसे तुलसीदास ने किया।

सूफी कवियों ने जहाँ ठेठ अवधी का प्रयोग किया तथा ~~रामकाव्यधारा के~~ कवियों तुलसी ने संस्कृतनिष्ठ अवधी का प्रयोग कर अवधी भाषा में लोक धर्म को व्यक्त करने में सफलता प्राप्त की। ब्रजभाषा जहाँ कलात्मकता से युक्त होने के साथ श्रृंगार, वात्सल्य के अलावा गंभीर विषयों को व्यक्त करने में असमर्थ थी वहीं अवधी ने अपनी गहराई के साथ लोकरंजन के ~~साथ लोकम~~ स्थान पर लोकमंगल को प्राथमिकता दी।

फिर भी, इन उपलब्धियों के बावजूद साहित्यिक अवधी की सीमाएँ निम्न हैं—

(1) यह आधुनिक जटिल यथार्थ के

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विषयों को व्यक्त करने में पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं है।

(2) परिवर्तनशील परिवेश के साथ परिवर्तन में लोचशीलता की कमी।

(3) लोकमंगल पर अत्यधिक ध्यान देने से यह जीवन के अन्य पक्षों को प्रकट करने में असक्षम।

(4) ~~इसी प्रकार~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

प्रेस के आविष्कार के साथ ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन तेजी से होने लगा और इसी क्रम में खड़ी बोली मे पत्र-पत्रिकाओं के ~~प्रकाशन~~ प्रकाशन से इसके प्रचार-प्रसार को व्यापकता मिली।

प्रेस के कारण ही हेनरी थामस कोल ब्रुक एवं हेनरी मार्टिन जैसे पादरियों ने बाइबिल एवं न्यू टेस्टामेंट का खड़ी बोली मे अनुवाद कर उसे लोगों तक पहुँचा दिया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट एवं प्रतापनारायण मिश्र जैसे भारतेन्दु मंडल के लेखकों ने 'कवि वचन सुधा', 'प्रदीप', 'ब्राह्मण' आदि ~~कवि~~ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रेस का प्रयोग कर निबंध, नाटक, राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को प्रेरणा देने के लिए विचारों के लिए खड़ी बोली का प्रयोग कर इसे परिमार्जित एवं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

परिष्कृत किया।

इसके अलावा फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दुस्तानी भाषा विभाग के अध्यक्ष जॉन गिलक्राइस्ट, सदासुखलाल, लल्लूलाल आदि ने प्रेस के कारण ही अपनी पुस्तकों का प्रकाशन तीव्र कर कंपनी के अधिकारियों एवं प्रशासन की भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास किया।

समग्र रूप से प्रेस ने ~~खड़ी बो~~ पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन को सहज, सुलभ, तीव्र बनाकर खड़ी बोली के विकास को तीव्र गति प्रदान की, जिस कारण 19वीं सदी में खड़ी बोली का राष्ट्रभाषा बनने का मार्ग प्रशस्त ~~हुआ~~ किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ

बोली को भाषा दर्जा देने के लिए निम्न कसौटियाँ हो सकती हैं —

(1) बोली का निश्चित व्याकरण होना चाहिए।

(2) बोली का मानक रूप होना चाहिए।

(3) इसकी एक निश्चित लिपि होनी चाहिए।

(4) इसकी शब्दावली पारिभाषिक, निश्चित एवं व्यापक होनी चाहिए।

(5) प्रयोक्ता वर्ग के साथ प्रयोग क्षेत्र की व्यापकता होनी चाहिए।

(6) बोली को भाषा बनने के लिए इसके जीवन के विविध क्षेत्रों जैसे शासन, प्रशासन, वाणिज्य, कला, विज्ञान, दर्शन आदि को व्यक्त करने के लिए व्यापक शब्दावली होनी चाहिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(1) इसे सीखना सहज, आसान एवं सरल होना चाहिए।

इन उपर्युक्त आधारों पर समग्र रूप से विचार करने के उपरांत किसी बोली के भाषा बनने की अर्हता तय की जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान जिन राष्ट्रीय नेताओं ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का पक्ष लिया, उनमें लाला लाजपतराय का योगदान भी प्रमुख है। उन्होंने राष्ट्रीय जीवन के एक प्रमुख आधार के रूप में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार पर प्रमुख बल दिया।

~~एनी बीसेंट के साथ संचालित~~

उन्होंने पुरुषोत्तम दास टंडन के साथ ~~मिलकर~~ मिलकर विभिन्न गतिविधियों में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग पर बल दिया।

स्वदेशी आंदोलन के दौरान वे स्वराज की पूर्ण प्राप्ति में विदेशी भाषा अंग्रेजी से मुक्ति के साथ स्वदेशी भाषा के रूप में ~~सभी~~ राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का समर्थन कर रहे थे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्होंने कांग्रेस के विभिन्न सम्मेलनों में हिंदी का पक्ष लिया और अन्य नेताओं को भी हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित किया।

पंजाब और लाहौर में हिंदी के प्रसार को बढ़ाने के इनके उद्देश्यों को साकार करने के लिए पुरुषोत्तम दास टंडन ने 'लोकसेवा दल' संगठन की स्थापना की जिन्होंने विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से हिंदी को व्यापकता प्रदान की। प्रयोग।

इस प्रकार स्वदेशी के समर्थक लाला लाजपतराय राष्ट्र संदर्भ में राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी के प्रबल समर्थक थे तथा इसके विकास में अविस्मरणीय योगदान दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' की व्याकरणिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये। 20

पूर्वी हिंदी और पश्चिमी हिंदी हिंदी भाषा के दो प्रमुख उपवर्ग है। पूर्वी हिंदी का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से जबकि पश्चिमी हिंदी का शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इन दोनो की भौगोलिक सीमा समीप होने के कारण पूर्वी भाषा की बोली अवधी एवं पश्चिमी भाषा की बोली ब्रज में कुछ स्तर तक समानता देखी जा सकती है।

इनकी व्याकरणिक विशेषताओं में अंतर ~~देखने के~~ लिए ~~इसमें~~ निम्न प्रकार है —

① पूर्वी हिंदी में संज्ञा के तीन रूप देखने को मिलते है जबकि पश्चिमी हिंदी में एक रूप ही होता है। जैसे,

लरका, लरकवा, लरकउना (पूर्वी हिंदी)

लड़का (पश्चिमी हिंदी)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) पूर्वी हिंदी में ~~बहुवचन~~ बनाने के लिए, न, अन, लोग, जन आदि का प्रयोग होता है जबकि पश्चिमी हिंदी में 'ए' का प्रयोग होता है जैसे

बेटा → बेटे (पश्चिमी हिंदी)
बेटा → बेटन (पूर्वी हिंदी)

(iii) पश्चिमी हिंदी में आकारांत विशेषण लिंग-वचन सापेक्ष होते हैं, जबकि पूर्वी हिंदी में अकारांत विशेषण अविकारी होते हैं

जैसे छोटा बेटा, छोटी बेटी (पश्चिमी हिंदी)
छोट लरकवा, छोट लरकी (पूर्वी हिंदी)

(iv) भविष्यकाल ~~के~~ के लिए पूर्वी हिंदी में 'ब' का प्रयोग होता है जबकि पश्चिमी हिंदी में 'ग' का प्रयोग। जैसे,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायगो, आयगो (पश्चिमी हिंदी)
~~ख~~ ऐहव, चलब (पूर्वी हिंदी)

(V) पूर्वी हिंदी उकार बहुला भाषा है, जबकि पश्चिमी हिंदी ~~ओकार बहुला~~ ओकारतंता की प्रवृत्ति से युक्त।

(VI) पश्चिमी हिन्दी 'ड़', 'ण' का प्रयोग जबकि पूर्वी में 'र', 'न' का प्रयोग। जैसे

सड़क → सरक
पाणी → पानी

(VII) पश्चिमी हिंदी ~~के~~ 'ऐ', 'औ' की पूर्वी हिंदी में 'अइ' 'अउ' के रूप मे संध्याक्षर के रूप में प्रयुक्त होने की प्रवृत्ति जैसे
गयौ → ~~गअओ~~ गअउ

(VIII) ~~पश्चिमी हिंदी~~ 'क्ष' का प्रयोग पश्चिमी हिन्दी में ~~'क्ष'~~ 'ख' के रूप में पूर्वी में 'छ' के रूप में, जैसे लखन, लक्षमण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(x) श, ष के प्रयोग के संदर्भ में भिन्नता देखने को मिलती है। पूर्वी हिंदी में 'श', 'ष' के स्थान पर 'स' का प्रयोग करने की प्रवृत्ति।

जैसे → भासा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में आंध्रप्रदेश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिये। 15

हिंदी साहित्य सम्मेलन (इंदौर) के माध्यम से गाँधीजी ने 1918 में दिये गये ऐतिहासिक भाषण के माध्यम से समस्त भारत में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर बल दिया।

इसी क्रम में आंध्रप्रदेश में हिंदी के आरंभिक प्रचार-प्रसार में नाट्याचार्य लक्ष्मणस्वामी का अमूल्य योगदान है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार किया। आंध्रप्रदेश से कुछ युवक हिंदी सीखने के लिए उत्तर भारत आये और फिर इन्होंने वापस लौटकर आंध्रप्रदेश में हिंदी सिखाने का काम किया। इनमें वेंकट सुब्बाराव, वेंकटेश्वर आदि का नाम प्रमुख है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी प्रचार सभा, मद्रास ने आंध्रप्रदेश में हिंदी को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसी क्रम में गाँधीजी के पुत्र एवं ~~[illegible]~~ वेंकटचैलेया जैसे व्यक्तियों ने अपना योगदान दिया।

इन संस्थागत एवं वैयक्तिक प्रयासों के फलस्वरूप म्युनिसिपल ~~[illegible]~~ के कॉलेजों एवं स्कूलों में हिंदी का अध्यापन शुरू हुआ तथा धीरे धीरे जिला बोर्ड के स्कूलों में हिंदी का प्रवेश हुआ। इस तरह हिंदी का अध्यापन - शिक्षण की भाषा बनने से उसका प्रसार तेजी से होने लगा। इसके साथ ही शिक्षकों के हिंदी में प्रशिक्षण के लिए एक प्रशिक्षण संस्था की स्थापना की गयी जिससे हिंदी के प्रशिक्षित अध्यापक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तैयार हुए। ~~इसके~~

इसके दक्षिण भारत हिंदी प्रचार संस्था ने हिंदी प्रसार के लिए उल्लेखनीय प्रयास किये। आज भी वर्तमान में दक्षिण भारतीय राज्यों में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रयोग में प्रथम स्थान है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'अपभ्रंश' की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्कृत से सरलीकरण की प्रक्रिया में पालि, प्राकृत से होते हुए अपभ्रंश का विकास हुआ। इसी क्रम में ध्वनि व्यवस्था, व्याकरण व्यवस्था के साथ ही शब्दकोशीय प्रवृत्तियों के संदर्भ में अपभ्रंश में विभिन्न प्रवृत्तियों को धारण किया जो निम्न हैं -

① संस्कृत से सरलीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बिन्दु तत्सम शब्दों का तद्भव रूपों में रूपांतरण था। इस कारण अपभ्रंश में संस्कृत के अधिकांश शब्द तद्भव में परिवर्तित हो गये। इस प्रकार अपभ्रंश में अपभ्रंश शब्द सर्वाधिक हैं, जैसे —

> लोयण
> दिट्ठि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) तद्भवीकरण की प्रक्रिया के बावजूद भी तत्सम शब्द अपभ्रंश में मौजूद रहे तथा प्रचलन की दृष्टि से संख्या में दूसरे नम्बर पर थे,

जैसे → पृथ्वी
रुद्राक्ष
उत्तम, आदि

(iii) इस दौर में देशज शब्दों का विकास शुरु हो गया। देशज शब्दों का निर्माण घरेलू तथा ध्वन्यार्थ आधार पर होने लगा
जैसे - गुण्डा, हांडी

(iv) इस दौर में विदेशी ~~आक्रमणकारियों के आगमन~~ संस्कृतियों से संपर्क के साथ ही विदेशज शब्दों का अपभ्रंश भाषा में आगमन हो गया जैसे, खुदा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश भाषा ~~तत्सम~~ शब्दों के अत्यधिक तद्भवीकरण के कारण ~~शब्दों~~ समान शब्दों की संख्या ~~ब~~ बढ़ने पर उन्हें समझने दुरूहता बढ़ने लगी। इसी कारण परवर्ती दौर में तत्समीकरण की प्रक्रिया भी देखी जाने लगी।

अपभ्रंश की इन शब्दकोषीय प्रवृत्तियों ने ~~भी~~ आधुनिक हिंदी के शब्दकोष के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभायी जो कि सरल, सहज शब्दावली के रूप में देखी जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) 'कहानी का रंगमंच'

हिंदी कहानी की विकास यात्रा में एक नए आयाम के रूप 'कहानी का रंगमंच' भी सामने आया जिसमें कहानी को नाटक की तरह रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

इसका तात्पर्य कहानी को नाटक के पात्रों द्वारा संवादों के रूप में प्रस्तुत करने से नहीं है, न ही कहानी को अलग-अलग खंडों में बाँटने से। अपितु इसमें कहानी के मूल रूप को बचाते हुए रंगमंच के अनुकूल बनाया जाता है।

इस रूप में कहानी को ज्यों के त्यों रूप में प्रस्तुत करने में सफलता देवेन्द्र राज अंकुर ने प्राप्त की। उन्होंने कहानी के एवं नाट्यंतर के मध्य के रूप को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहानी के मूल रूप को बताते हुए प्रस्तुत किया।

इस क्रम में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में मोहन राकेश, मार्कण्डेय आदि की कहानी का सफल मंचन किया जा चुका है। इसमें एक प्रयोग यह किया जाता है कि एक पात्र ही नायक तथा अन्य चरित्रों के अलग-अलग समय पर भूमिका अदा करें तथा कभी कथावाचक की भूमिका में आ जाये।

रंगमंच की सादगी 'कहानी के रंगमंच' की प्रमुख विशेषता है तथा वर्तमान समय में इस कहानी के रंगमंच ने कहानी कला को विस्तृत आधार प्रदान कर हिंदी कहानी को एक नयी पहचान दी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पल्लव की भूमिका' का महत्त्व वही है जो पश्चिम के स्वच्छंदतावाद में विलियम वर्ड्सवर्थ के 'लिरिकल बैलेड्स' का है। इसे छायावाद का घोषणापत्र माना जाता है।

इसमें सुमित्रानंदन पंत ने पहली बार काव्य कला का सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया तथा उस संक्रमणकालीन दौर में खड़ी बोली एवं ब्रजभाषा के मध्य खड़ी बोली का काव्य भाषा के रूप में पक्ष लिया।

इसी क्रम में उन्होंने इसमें खड़ी बोली में निहित संगीत विधान एवं छंद विधान की संभावनाओं की खोज की।

उन्होंने कला पक्ष के विवेचन के अंतर्गत अलंकारों को सजावट का साधन न मानकर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाव अभिव्यक्ति के विरोध द्वारा माना। इसके अलावा उन्होंने माध्यम भाषा के रूप में खड़ी बोली पर विचार करते हुए पर्याय शब्दों, बिम्ब विधान आदि की चर्चा की।

समग्र रूप में छायावाद के घोषणा पत्र के रूप में तथा काव्य भाषा के रूप खड़ी बोली को परिमार्जित एवं परिष्कृत कर छायावादी काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में इसका (पल्लव की भूमिका) प्रमुख महत्व है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

अज्ञेय की ख्याति लेखक, कहानीकार, निबंधकार, चिंतक के साथ-साथ एक प्रसिद्ध कवि के रूप में रही है। उनकी काव्यानुभूति समय के साथ-साथ नये-नये आयाम ग्रहण करती रही है जिसे 'भग्न दूत' से 'हरी घास पर क्षण भर' में देखा जा सकता है।

इनकी काव्यानुभूति के प्रमुख विषय निम्न है-

(1) नर-नारी प्रेम

(2) प्रकृति

(3) मानवता एवं समाज

(4) अध्यात्म एवं रहस्यवाद

प्रेम अज्ञेय की काव्यानुभूति का केन्द्रीय विषय रहा है तथा इसके साथ ही उनकी काव्यानुभूति में प्रकृति विविध रूपों

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के साथ शामिल हो गयी है।

इनके काव्यों में मानवता एवं समाज के अंतर्गत वे समाज को मानव के लिए मानते है, न कि समाज के लिए मानव को। जैसे, नदी के द्वीप, यह द्वीप अकेला, सर्जना के क्षण आदि में।

अंतिम दौर में रहस्यवाद एवं अध्यात्म उनकी काव्यानुभूति का प्रमुख विषय बन गया। इसी क्रम में वे जेन बौद्धमत के प्रभाव में सृजन के रहस्य के क्रम में असाध्य वीणा की रचना करते है।

इस प्रकार अज्ञेय की काव्यानुभूति विविध एवं सुंदर रूप धारण करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद की पहचान उस दौर में विकसित नये अलंकारों को लेकर भी है। छायावादी कवियों ने अपने भावों को गहराई एवं प्रभावी रूप से वर्णित करने के लिए नये अलंकारों के रूप में (i) मानवीयकरण अलंकार
(ii) विशेषण विपर्यय "
(iii) ध्वन्यार्थ व्यंजना अलंकार

आदि नये अलंकारों का सृजन किया। मानवीयकरण अलंकार के अंतर्गत प्रकृति प्रेम में इन कवियों ने प्रकृति को मानव का रूप ही दे दिया जैसे -

~~"मैं रति की प्रतिकृति लज्जा~~

"मेघमय आसमान से उतर रही थी
संध्या सुंदरी परी सी
धीरे - धीरे - धीरे"

"मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ शालीनता सिखलाती हूँ।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेषण विपर्यय अलंकार में विशेषण का प्रयोग असंगत विशेष्य के साथ किया जाता है, जैसे -

→ 'करुणामय सुंदर मौन'

→ 'चंचल मन का आलस्य'

वहीं ध्वन्यार्थ व्यंजना अलंकार ध्वनि की पुनरावृत्ति के माध्यम से भाव में विशिष्टता प्रदान की जाती है जैसे

- "झर झर निर्झर गिरी सर से"
"कल कल का होता शब्द विकल
थर थर कँप रही थी दीप्ति तरल।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार ~~जैनेन्द्र~~ जैनेन्द्र के उपन्यास 'परख' की नायिका 'कट्टो' हिंदी उपन्यास की एक अविस्मरणीय चरित्र है।

इसमें ~~कट~~ कट्टो एक बाल विधवा के रूप में उपस्थित है। वह बिहारी के प्रति प्रेम भावना रखती है तथा बिहारी भी उसे चाहता है। लेकिन बिहारी की शादी कहीं और होने पर 'कट्टो उसके प्रति समर्पण भाव रखती है तथा वह बिहारी के कहने पर अंततः उसकी पत्नी के भाई साथ शादी करने के लिए तैयार हो जाती है।

इस उपन्यास में जैनेन्द्र ने कट्टो के मानवीय मूल्यों के उच्च स्तर पर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

![दृष्टि The Vision]

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रस्तुत किया है तथा पाठक को
कटरो के प्रति श्रद्धा भाव से भर
देता है। इस प्रकार मानवीय मूल्यों
की गहन प्रस्तुति एवं संवेदनशीलता आदि
के कारण कटरो हिंदी उपन्यास के नारी
चरित्रों में प्रमुख स्थान अर्जित कर लेती है।

कृपया इस स्था... कुछ न लिखें।
(Please don't w... anything in thi...)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकालीन साहित्य में बिहारी अपनी कुछ विशिष्टताओं के कारण सर्वश्रेष्ठ कवि की प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। रीतिकाल में होते हुए भी उन्होंने अन्य रीतिकवियों की लक्षण-ग्रंथ परंपरा का अनुकरण न कर अपनी मौलिकता प्रस्तुत की है।

बिहारी की रचना 'बिहारी सतसई' की इतनी प्रसिद्धि है कि इसे 'सतसई' परंपरा में सतसई के नाम से जाने जाना लगा है। इसके लगभग 700 दोहों में बिहारी ने अपनी विशिष्ट अनुभाव योजना, भाषा की सामासिक योजना, अनूठी अलंकार योजना, अद्वितीय बिम्ब योजना एवं अनोखी प्रतीक योजना के माध्यम से पाठक को चमत्कृत कर देते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कल्पना की सामासिक क्षमता के रूप में इसका बोध द्रष्टव्य है -

"बतरस लालच लाल की मुरलीधरी लुकाय।
सौंह करे, भौंहन हँसे, दैन कहै नट जाय।"

वे एक पद में सात क्रियापदों के माध्यम से नायक - नायिका की संपूर्ण काम चेष्टा को व्यक्त कर देते हैं। भाषा की इस सामासिक क्षमता एवं विभाव योजना से पाठक के सामने चल चित्र का एहसास होता है, जैसे

"कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सूँ बात।"

इसी प्रकार बिहारी अपने एक दोहे में सभी कला रूपों के आनंद की बात करते हैं, जैसे -

"तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग, रति रंग
अनबूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी की श्रेष्ठता का एक प्रमुख कारण यह भी है उन्होंने अपनी सतसई में श्रृंगार का तो प्रमुख रूप से वर्णन किया ही है, इसके साथ ही वैविध्यता लाते हुए कुछ सामाजिक समस्याओं, धार्मिक काव्य एवं तत्कालीन राजव्यवस्था की कुछ विसंगतियों को उजागर भी किया है, जैसे

" नहि पराग, नहि मधुर मधु, नहि विकास इहि काल
अली कली सो बंध्यो, आगे कौन हवाल।"

इस प्रकार समग्र रूप में बिहारी अपनी विशिष्ट काव्य शिल्प क्षमता एवं विषय वैविध्य के माध्यम से पाठक को न केवल चमत्कृत कर देते हैं बल्कि आनंद में सराबोर करते हुए कभी-कभी ~~सामाजि~~ कुछ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित भी करते है।
इन सब विशेषताओं के कारण बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि एवं सर्वश्रेष्ठ कवि उभर कर आते है।

कृपया इस स्थान ... कुछ न लिखें।
(Please don't w... anything in this...

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनवादी कहानी' का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी कहानी की विकास यात्रा में 1980 के दशक में 'जनवादी कहानी' की शुरुआत देखी जा सकती है जो प्रेमचंदीय कहानी धारा का ही अगला संस्करण है। इसकी शुरुआत 1982 में 'जनवादी लेखक संघ' की स्थापना के साथ हुई। इसके प्रमुख रचनाकार संजीव, स्वयंप्रकाश एवं शिवमूर्ति है।

इस कहानी में कहानी के प्रतिपाद्य के रूप में समस्याओं को जनसामान्य के बीच से उठाया है। यह विचारधारा के रूप में मार्क्सवादी विचारधारा को स्वीकार तो करती है किन्तु इसका वैशिष्ट्य यह है कि यह मार्क्सवादी विचारधारा को जनसामान्य के अनुभव से जोड़कर देखकर जोड़ती है।

इस आंदोलन ने यह स्वीकार किया है मध्यवर्ग को सर्वहारा के साथ आना चाहिए तथा मध्यवर्ग का आधार सर्वहारा ही हो सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी क्रम में यह कहानी आंदोलन मध्यमवर्ग के मूल्यों को खारिज कर सर्वहारा के संघर्ष की प्रस्तावना के साथ मजदूर एवं कृषकों के संघर्ष को सूक्ष्म रूप में उभारता है।

इसमे ~~आआआ~~ आलालोचना, परिष्कार की चेतना, सर्वहारा के कल्याण आदि की भावना को प्रमुख रूप से उभारा गया है।

इस प्रकार देखा जाये तो यह कहानी आंदोलन प्रगतिवादी मूल्यों को ही धारण करता है तथा मुक्तिबोध के '~~बुद्धिजीवी~~ मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के ऐतिहासिक अंतर्द्वन्द्व' के प्रस्तावना के अगले स्तर के रूप मे सर्वहारा एवं मध्यमवर्ग के सामन्वय के द्वारा सर्वहारा के कल्याण, संघर्ष चेतना को प्रतिपादित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्हीं जनसामान्य की समस्याओं को प्रस्तुत करने के संगत ही इसका शिल्प सहज एवं साधारण है जिसमें पूर्ण पारदर्शिता है तथा प्रतीकों के प्रयोगों के बजाय सीधी भाषा में ~~प्रतिब~~ प्रगतिवादी प्रतिपाद्य को प्रस्तुत किया है। ~~इसकी~~

~~आंदो~~ इस कहानी आंदोलन की प्रमुख रचनाएँ हैं—

स्वयंप्रकाश – सूरज कब निकलेगा

संजीव – अपराध

शिवमूर्ति – कसाईबाड़ा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य के वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी साहित्य के यात्रा वृतांतों में अज्ञेय, एवं, ~~राहुल~~ सांस्कृतायन के बाद निर्मलावर्मा एक प्रसिद्ध लेखक रहे हैं। उन्होंने ~~अपनी~~ अपने सुप्रसिद्ध यात्रा वृतांत 'चीड़ो पर चाँदनी' मे अपने देश एवं विदेश के वर्णनों को रोचकता एवं सारगर्भितपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया है।

निर्मल वर्मा न केवल भौगोलिक वर्णन करते हैं, बल्कि स्थलों के सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलुओं से भी होकर गुजरते हैं। इसी क्रम में वे विश्व के देशों के धार्मिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, सामाजिक, नागरिक चरित्र एवं मानवीय मूल्यों का विस्तार से वर्णन करते हैं। यह वर्णन रोचकपूर्ण होने के साथ सहज एवं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बोधगम्य होता है। इस प्रस्तुति में प्रसंगानुसार उचित शब्दों का प्रयोग वर्णन को सटीक बना देते है।

भारत एवं विदेशों के यात्रा वर्णनों में वे भारत की अन्य देशों से तुलना करते हुए भी चलते है। इसी क्रम में वे आइसलैंड के नागरिकों की अवैध संतानों के प्रति दृष्टि को प्रस्तुत करते है -

'सनकी से दिखने वाले ये लोग अपनी प्रकृति से कुछ तथ्यों के प्रति कितने सहज हो सकते हैं। ये अवैध संतानों को सहज अन्य बच्चों के समान दर्जा देते है।'

इसी प्रकार वे वहाँ के स्वच्छ पर्यावरण का सुंदर वर्णन करते हुए भारत में इसी वातावरण को लाने की कल्पना करते है।
जैसे -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इतनी स्वच्छ, निर्मल एवं हल्की वायु है। मन में इसे जेब मे भरकर दिल्ली ले जाने का मन करता है।'

- इस प्रकार हिंदी यात्रा वृतांतों में निर्मल वर्मा का अविस्मरणीय योगदान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास ने कलियुग-वर्णन में जिन समस्याओं और मूल्यों को उठाया है, वे न केवल तद्युगीन स्थितियों को प्रस्तुत करते हैं, बल्कि ~~अपनी~~ हर युग में प्रासंगिक हो उठते हैं। तुलसीदास ने अपने कलियुग वर्णन में अपने युगबोध को प्रस्तुत करते हुए निम्नलिखित समस्याओं को उठाया है –

(1) छल कपट एवं मिथ्या आचरण → तुलसीदास के अनुसार कलियुग में व्यक्ति कपटपूर्ण मिथ्या आचरण ~~को~~ को अपना लेता है तथा मानवीय मूल्यों के ह्रास के साथ व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए सामाजिक हितों को भी दाव पर लगा देता है। ~~वह~~ वे 'जाके नख और जटा बिशाला, ते प्रसिद्ध अति कलि काला।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के माध्यम से ढोंगियो के चरित्र को उजागर करते है।

कलियुग वर्णन के अंतर्गत वे बेरोजगारी एवं भूखमरी जैसे प्रमुख आर्थिक मुद्दों को उठाते है जैसे -

'खेती न किसान को बनिक को बनिज न नौकर को चाकरी।
भूखे न अन्न *** सिद्ध मान सोच बस, कहाँ जाये क्या करे।

इसी प्रकार वे राजव्यवस्था के पतन की ओर इंगित करते है जहाँ राजा अपने दायित्वों से विमुख है तथा इसी क्रम में वे राजा को अपने कर्मों के परिणाम की चेतावनी देते है- जैसे

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप नरक अवस अधिकारी।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी क्रम में तुलसीदास कलियुग मे ~~पा~~ व्यवस्था के पतन पर क्षोभ व्यक्त करते है। जहाँ विभिन्न व्यक्तियों ने अपने वर्णों के अनुसार कर्म को छोड़कर अनाचार में व्यस्त हो गये है, जैसे 'विप्र निरक्षर लोलुप कामी, निराचार सठ वृषली स्वामी'

गोस्वामी के उपर्युक्त कलियुग वर्णन में जहाँ वे तद्युगीन समस्याओं को उठाते है, लेकिन ये समस्याएँ हर युग मे किसी-न किसी रूप में मौजूद रही है। वर्तमान समय में बेरोजगारी, भूखमरी विभिन्न राष्ट्रों के समक्ष गंभीर समस्या है। इसी प्रकार विभिन्न राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, अभिजात्यवाद, लोककल्याण विमुखता इसी राजनीतिक व्यवस्था के दोषों को उजागर करते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वहीं इस उपभोक्तावादी युग व्यक्ति स्वकेन्द्रित होने के साथ कपटपूर्ण आचरण करने से नहीं हिचकता है तथा ढोंगियों के रूप में बहुत से व्यक्ति आज भी दिखावा करते है।

वर्णव्यवस्था के पतन के संदर्भ में वर्तमान प्रसंग में देखा जाये तो व्यक्ति का अपनी क्षमता के अनुसार काम नहीं करना, कामचोरी करना आदि को रखा जा सकता है।

इस प्रकार समग्र रूप में तुलसीदास ने अपने कलियुग वर्णन में अपने व्यापक दृष्टिबोध से उन सभी बुनियादी समस्याओं को उठाया है जो हर युग किसी न किसी अमानवीय स्थिति के रूप में मौजूद रहती है तथा साथ ही इसका समाधान 'रामराज्य की कल्पना' के रूप में दे दिया है, जो समग्र दृष्टिकोण से युक्त श्रेष्ठ कवि बनाता है।

कृपया इस स्थान ... कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this s...

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नवलेखन दौर के प्रसिद्ध रचनाकार मोहन राकेश ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'आधे-अधूरे' में अपने अन्य नाटकों जैसे 'आषाढ़ का एक दिन' एवं 'लहरों के राजहंस' के समान ही 'संबंधों की टूटन' को केन्द्रीय ~~बनाया~~ विषय बनाया है। इसके बावजूद यह नाटक पूर्ववर्ती नाटकों से इस रूप में अलग है कि इसमें ऐतिहासिक ढाँचे को न लेकर वर्तमान युग को लेते हुए इसे समसामयिक युग का प्रतिबिम्बित करने वाला नाटक बनाया है।

विचारधारा के आधार पर इसमें अस्तित्ववादी दृष्टिकोण को सूक्ष्म रूप में महसूस किया जा सकता है। आधे-अधूरे के पात्र महेन्द्र एवं सावित्री के परिवार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में संबंधों में तनाव का उच्च स्तर चल रहा है। वे एक-दूसरे को देखना तक नहीं चाहते हैं, फिर भी साथ रहने को मजबूर हैं।

इसी दौरान सावित्री अनेक पुरुषों से टकराती है, लेकिन सभी को अधूरा पाती है तथा उसके पति महेन्द्र की भी यह स्थिति है। वे हमेशा ~~अधूरे~~ अधूरे बने रहते हैं तथा चाहकर भी अलग नहीं हो पाते हैं।

मोहन राकेश ने इस नाटक के माध्यम से "दाम्पत्य संबंधों के खोखलेपन, पारिवारिक मनमुटाव, परिवार के बिखराव की समस्या को प्रमुख रूप से उठाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह समस्या न केवल इस नाटक के पात्रों की है, बल्कि उस दौर के प्रत्येक ~~मा~~ आधे पुरुष एवं नारी है। नवलेखन के दौर के दौर में सशक्त होती हुई नारी के साथ पुरुष-स्त्री के परंपरागत संबंधों में परिवर्तन चल रहा था। इसी के प्रमुख परिणाम स्वरूप पुरुष-स्त्री संबंधों में ये तनाव उत्पन्न हो रहे थे, जिन्हे मोहन राकेश ने महेन्द्र एवं सावित्री के माध्यम से बखूबी उभारा है। इस प्रकार यह समसामयिक युग को प्रतिबिम्बित करने वाला नाटक बन जाता है। जो कि नवलेखन के दौर के काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य था।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी कहानी में उपस्थित जादुई यथार्थवाद पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी कहानी में यथार्थ को एक नये प्रकार से प्रस्तुत करने के क्रम में जादुई यथार्थवाद के शिल्प का प्रयोग पंकज बिष्ट ने शुरू किया गया। इसके अंतर्गत मिथकों, विश्वासों एवं मान्यताओं के आधार पर यथार्थ को प्रभावपूर्ण रूप से व्यक्त किया जाता है।

हालाँकि पंकज बिष्ट ने जादुई यथार्थवाद की शुरुआत कहानी कला में अपनी कहानी 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते' से की, लेकिन इस शिल्प को प्रसिद्धि उदयप्रकाश ~~नारायण~~ ने दिलवायी। उन्होंने अपनी कहानी 'तिरिछ' में इसका प्रयोग उत्कृष्ट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रूप में किया है। त्रिशंकु ग्रामीण समाज में प्रचलित विश्वास है। इसमें पाठक का सामना एक दुस्वप्न से होता है जिसमें नायक के पिता की मृत्यु हो जाती है। लेकिन यह कहानी का निहितार्थ नहीं है।

इसके माध्यम से लेखक शहरी जीवन की विसंगतियों एवं मानव मूल्यों के ह्रास को ~~प्रमुख~~ प्रस्तुत करता है जिसमें शहरी जीवन की संवेदनहीनता, ~~संबंधों में~~ ~~गिरते नैतिक मूल्य~~ मूल्यहीनता आदि को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार जिस तरह से 'फैंटेसी' शिल्प का प्रयोग मुक्तिबोध ने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ने जटिल यथार्थ को प्रस्तुत करने में किया है, इसी प्रकार जादुई यथार्थ का प्रयोग भी हिंदी कहानी में इस जटिल एवं संश्लिष्ट यथार्थ को प्रभावी एवं स्पष्ट रूप में व्यक्त करने में किया गया तथा यह सफल भी हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय की कहानी-कला की तुलना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation